परिणामपरक कार्यक्रम (Program Outcomes)

हिंदी विभाग

भारत की राजभाषा के रूप में हिंदी का जो संवैधानिक महत्व है , उससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि यह पूरे देश की संपर्क भाषा है । देश के किसी भी हिस्से में , चाहे वहां कोई भी भाषा बोली जाती हो , हिंदी में वहां के लोगों से संपर्क करने में कोई कठिनाई नहीं होती है । इतना ही नहीं , यह अंग्रेजी के बाद वैश्विक परिदृश्य की दूसरी भाषा है जिसको बोलने -समझने वाले लोग दुनिया के अनेक देशों में हैं और इस भाषा में रचे गए साहित्य का अनुवाद दुनिया की कई प्रमुख भाषाओं में उपलब्ध है । दूसरी ओर दुनिया की जितनी महत्वपूर्ण भाषाओं में साहित्य लिखा जा रहा है , उनका अनुवाद बहुत जल्द हिंदी में उपलब्ध हो जाता है । विश्व बाजार के दौर में दुनिया के अनेक देश कारोबार के सिलसिले में आपस में जुड़े हैं , उनके आर्थिक संबंधों में भी हिंदी की भूमिका उल्लेखनीय है ।

अन्नदा कॉलेज का हिंदी विभाग विद्यार्थियों के बीच भाषा और साहित्य की मजबूत समझ बनाने के प्रयास में लगभग तीस वर्षों से निरत है । इस लंबी अवधि के दौरान विभाग के द्वारा हमेशा नवीन उद्भावनाओं से छात्र - छात्राओं को परिचित कराने का प्रयास किया जाता रहा है । यहां एक ओर भाषा और साहित्य की परंपरा से छात्र - छात्राओं को परिचित कराने का प्रयास किया जाता है तो दूसरी ओर ज्ञान - मीमांसा (EPISTEMOLOGY) के विभिन्न क्षेत्रों , अनुशासनों का ज्ञान भी दिया जाता है । हिंदी साहित्य का इतिहास , संस्कृत , हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य एवं आलोचना - सिद्धांत के साथ - साथ पाश्चात्य आलोचना के मानदंड , मनोवैज्ञानिक आलोचना , स्त्री विमर्श , उत्तर आधुनिकता , उत्तर संरचनावाद एवं उत्तर औपनिवेशिक विमर्शों से भी विद्यार्थियों को परिचित कराया जाता है । इस क्रम में स्वाभाविक रूप से उन्हें भाषा विज्ञान , दर्शन , नृतत्वशास्त्र , समाज विज्ञान , संचार माध्यम एवं इतिहास की पर्याप्त जानकारियां दी जाती हैं । अध्ययन एवं अध्यापन के क्रम में छात्र - छात्राओं को रोजगारोन्मुखी और व्यावसायिक क्षेत्रों के बारे में भी जागरूक बनाना हमारे लक्ष्य में शामिल है । इसके लिए उन्हें दक्षता - विकास एवं कौशल - विकास - पाठ्यक्रमों से भी जोड़ा जाता है । हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन से रोजगार के परंपरागत स्रोतों के अलावे अनेक नए स्रोत भी आज के दौर में उपलब्ध हैं , विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार उन्हें संबद्ध क्षेत्रों से जुड़ने के मशवरे ही नहीं दिए जाते बल्कि उनके बारे में बुनियादी जानकारियां भी दी जाती हैं ।

परिणामपरक विशिष्ट कार्यक्रम (Program Specific Outcomes) :

यहां विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास पर बल देने के साथ - साथ उनको रोजगापरक शिक्षा से भी जोड़ा जाता है । प्रशासनिक सेवाओं के अलावे प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्चतर शिक्षा संस्थानों से जुड़ने ,

सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यालयों , बैंकों में हिंदी अधिकारी अथवा अनुवादक के रूप में रोजगार पाने के पारंपरिक स्रोतों के अलावे प्रिंट मीडिया , इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में संपादन , एंकरिंग , रिपोर्टिंग आदि के क्षेत्रों में भी हिंदी भाषा - साहित्य का अध्ययन रोजगार के नए स्रोत उपलब्ध कराता है । आजकल न्यूज पोर्टल , वेब लॉग , ऑनलाईन पत्रकारिता , शिक्षण , व्यावसायिक लेखन आदि रोजगार के नए सायबर क्षेत्र भी हिंदी के विद्यार्थियों के लिए खुल गए हैं जिनसे जुड़कर आर्थिक रूप से सशक्त बनने के साथ - साथ वे प्रसिद्धि और सामाजिक प्रतिष्ठा भी हासिल कर सकते हैं । दक्षता विकास एवं कौशल विकास - पाठ्यक्रम से इन संदर्भों में उन्हें सहायता मिलती है ।

पाठ्यक्रम - परिणाम (Course Outcomes) :

1. विद्यार्थियों में मानवीय मूल्य एवं नैतिक बोध के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना ।

2. हिंदी भाषा और साहित्य की व्यापक जानकारी प्रदान करना ।

3. भाषिक क्षमता का विकास ।

4. पाठ्यपुस्तकों के समुचित अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ाने , शिक्षा और ज्ञान के विविध अनुशासनों के अध्ययन की ओर प्रेरित

   करना ।

5. हिंदी साहित्य के इतिहास - लेखन की परंपरा , इतिहास - दर्शन , आदिकालीन सिद्ध कवि सरहपा से लेकर संत कवियों , मध्यकालीन कवियों से लेकर समकालीन कवियों , कथाकारों एवं आलोचकों , भाषा वैज्ञानिकों एवं मीडिया अध्ययन से जुड़े विमर्शकारों से परिचित कराना , स्त्री एवं दलित लेखन को लेकर विद्यार्थियों के बीच वाद , विवाद और संवाद आयोजित करना ।

6. विद्यार्थियों की सूक्ष्म विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक तर्क - क्षमता के विकास में सहयोग देना ।

7. बेहतर संभाषण , लेखन , व्यक्तित्व के बहुमुखी विकास एवं तर्कशील वैचारिक क्षमता के निर्माण में सहायता प्रदान करना ।